Roll No. .....

डी. पी. जे. - 12 (फलित ज्योतिष में डिप्लोमा)

वार्षिक परीक्षा- 2015

डी.पी.जे.- 104

(मुहूर्त विचार)

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक-** 60

नोट : यह प्रश्न-पत्र साठ (60) अंकों का है जो तीन (03) खंडों क, ख तथा ग में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड-क

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पन्द्रह अंक निर्धारित हैं । शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं । 2×15

1. मुहूर्त से आप क्या समझते हैं, मुहूर्त का उद्देश्य बताते हुए उसकी उपयोगिता सिद्ध कीजिए।

2. 'संस्कार' को परिभाषित करते हुए भौतिक जीवन में उसके योगदान को रेखाकिंत कीजिए।

3. 'विवाह एक संस्था का नाम है।' इस कथन पर विचार कीजिए।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए-

   (क) विवाह मुहूर्त (ख) नामकरण

   (ग) राहुकाल (घ) उपनयन

TRIAL MODE − a valid license will remove this message. See the keywords property of this PDF for more information.

खण्ड-ख

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पाँच (05) अंक निर्धारित हैं । शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं । (4×5=20)

1. गर्भाधान एवं पुंसवन संस्कार पर विचार कीजिए।

2. गृह प्रवेश करने का मुहूर्त्त लिखिए।

3. नामकरण एवं अन्नप्राशन मुहूर्त्त का वर्णन कीजिए।

4. सोलह संस्कार कौन-कौन से हैं? संक्षेप में परिचय दीजिए।

5. चौघड़िया मुहूर्त्त से क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

6. जलाशय मुहूर्त्त का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

7. देवालय निर्माण एवं मूर्ति प्रतिष्ठा पर एक निबन्ध लिखिए।

8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का वर्णन कीजिए।

   (क) उदयास्त

   (ख) गृह देवता प्रतिष्ठा

   (ग) चूड़ाकर्म

   (घ) कर्णभेद मुहूर्त्त

TRIAL MODE − a valid license will remove this message. See the keywords property of this PDF for more information.

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है । इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं । (10×1=10)

1. मुहूर्त्त शास्त्र में अष्टमी तिथि के स्वामी माने गए हैं–

   (अ) रवि (ब) विष्णु

   (स) शिव (द) दुर्गा

2. श्रावण मास किसकी प्रतिष्ठा में उत्तम है–

   (अ) राम (ब) शिव

   (स) विष्णु (द) दुर्गा

3. सूर्वदेव प्रतिष्ठा हेतु श्रेष्ठ मास है–

   (अ) चैत्र (ब) वैशाख

   (स) माघ (द) श्रावण

4. त्रिकोण में आता है–

   (अ) 4 (ब) 8

   (स) 12 (द) 5

5. राहुमुख का विचार करना चाहिए–

   (अ) गृहारम्भ में नींव खोदने पर

   (ब) वृक्षारोपण में

   (स) विवाह मुहूर्त्त में

   (द) नक्षत्र शूल जानने में

TRIAL MODE − a valid license will remove this message. See the keywords property of this PDF for more information.

6. होलाष्टक होता है–

(अ) 6 दिन का (ब) 7 दिन का

(स) 8 दिन का (द) 9 दिन का

7. एक नाड़ी अच्छी होती है–

(अ) पति–पत्नी में (ब) गुरु–शिष्य में

(स) सेवक–स्वामी में (द) किसी में नहीं

8. गृह प्रवेश में शुक्र शुभ होता है–

(अ) पूर्वस्थ (ब) सम्मुखस्थ

(स) पृष्ठस्थ (द) पश्चिमस्थ

9. कूर्मचक्र का उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है–

(अ) ज्योति:प्रकाश (ब) व्यवहारकोश

(स) अमरकोश (द) ज्योतिश्चिन्तामणि

10. कृष्ण की प्रतिष्ठा हेतु श्रेष्ठ है–

(अ) रामनवमी (ब) विजयादशमी

(स) रोहिणी (द) जन्माष्टमी

TRIAL MODE − a valid license will remove this message. See the keywords property of this PDF for more information.